गुरूकुल परम्परा को पुनःस्थापित करें

ज्ञानसरोवर (माउण्टआबू)। राजस्थान की राज्यपाल महामहिम मार्गरेट अल्वा ने ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग द्वारा 'नये समाज के निर्माण में शिक्षकों का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि इंसान को परमात्मा तक पहुंचने के लिए माध्यम की आवश्यकता रहती है। भले-बुरे का भेद करना तथा हमारे लिए क्या जरूरी है यह जानना ही शिक्षा है। आज शिक्षा एक व्यवसाय का रूप ले चुकी है। प्राचीन गुरूकुल परम्परा जो गुरू व शिष्य के सम्बन्ध को आजीवन बनाए रखती थी वह लुप्त प्रायः हो चुकी है। शिक्षा का अधिकार मिला है मगर समानता के अधिकार समाप्त हो गए हैं। असमानता ने अनेक विसंगतियां पैदा कर दी हैं। कहीं शिक्षा के लिए भवन नहीं हैं तो कहीं शिक्षक नहीं हैं तो कहीं पुस्तकों का अभाव है। जीवन की सच्चाई का सामना करने में विद्यार्थी स्वयं को असमर्थ महसूस कर रहे हैं।

राज्यपाल महामहिम मार्गरेट अल्वा को ईश्वरीय सौगात भेंट करतीं दादी रतनमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु.मृत्युंजय।

माता-पिता यह सोचते हैं कि बच्चे को किसी अच्छे स्कूल में अधिक डोनेशन देकर दाखिल करा देना ही हमारा फर्ज है, बस इसके बाद की जिम्मेवारी शिक्षक का है। लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि बच्चे की प्रथम गुरू तो माता है। जिम्मेवारी सिर्फ शिक्षक की नहीं है। आज हमारे शिक्षक बड़े शहरों में ही नौकरी करना चाहते हैं, गांवों में जाना उन्हें पसंद नहीं। शिक्षक में यदि ईमानदारी का गुण नहीं होगा तो वह बच्चों का क्या मार्गदर्शन करेगा। यह एक विडम्बना है कि जिन स्थानों पर शिक्षित वर्ग की बहुसंख्या है वहां कन्या भ्रूण हत्या का ग्राफ भी अधिक है। चिकित्सकों के परिवार में भी यह अपराध अधिक हो रहे हैं। दहेज की अभिलाषा के कारण हर परिवार बेटा ही चाहता है। इसकी तुलना में गरीब महिलाओं में अधिक ईमानदारी व कर्त्तव्यपरायणता देखी गई है, शिक्षितों में इसका अभाव दिख रहा है।

के.सी.सिंघल, कुलपति, जयपुर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज ने कहा कि संत-महात्मा, शिक्षक व इंजीनियर ही देश की तरक्की के आधार हैं। पारिवारिक शिक्षा का ह्रास हुआ है। शिक्षक व छात्रों की बीच का सम्बन्ध श्रद्धा व सम्मान से परिपूर्ण नहीं रहा।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि धर्म का अभिप्राय उन उच्च लक्षणों की धारणा जो पूज्य देवताओं के गाये हुए हैं। मनुष्य का शरीर देखने में आता है लेकिन उसको चलाने वाली शक्ति आत्मा को ज्ञान नेत्र से अनुभव किया जा सकता है। जहाँ पवित्रता की शक्ति है वहां सदा शुद्धता है। शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय ने कहा कि शिक्षा को शक्ति माना गया है। शिक्षक ही वह माध्यम हैं जो समाज को मूल्यों से सिंचित कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु.ममता ने और धन्यवाद ब्र.कु.बिन्नी ने किया।

संस्कार प्राप्त होंगे आध्यात्मिक ज्ञान से

ज्ञानसरोवर। पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह की निर्देशिका एवं अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित श्रीमती किरण चोपड़ा ने ब्रह्माकुमारीज महिला प्रभाग द्वारा 'वर्तमान समय में महिलाओं की भूमिका' विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रगतिशील समाज में जीने का दंभ रखते हुए भी आज हम सुख व शांति की तलाश में लगे हुए हैं। कहने को तो हम मंगल ग्रह पर भी जा पहुंचे हैं लेकिन जीवन में मंगल तलाशने में हम कामयाब नहीं हो पा रहे। संसारिक पढ़ाई के लिए अनेक विश्वविद्यालय हैं लेकिन सच्ची सुख शांति प्राप्त करने की शिक्षा इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ही प्राप्त हो सकती है। इनकी विद्वता की मैं कायल हो गई हूँ। जिन्दगी की सच्चाई को इतनी सहजता से भीतर उतारने की क्षमता इन्हीं ब्रह्माकुमारी बहनों के पास है। इनकी शक्तियों के आगे हम नतमस्तक हैं। श्रेष्ठ संस्कारों के बिना डिग्रियां प्राप्त करना किसी काम का नहीं है। संस्कार प्राप्त होंगे इस आध्यात्मिक ज्ञान की मदद से। इस शिक्षा को अपनाकर ही हम स्वयं को संस्कारित कर सकते हैं। असहाय एवं कमजोर महिलाओं की सुरक्षा के लिए सामने आना चाहिए।

श्रीमती किरण चोपड़ा, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.चक्रधारी, ब्र.कु.डॉ.सविता तथा अन्य दीप जलाते हुए।

गुजरात महिला एवं बाल विकास प्रभाग की सचिव अंजू शर्मा ने कहा कि सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंची महिलाओं में समान रूप से एक विशेषता दिखाई दी है कि उनमें से किसी में भी महिला होने की हीन भावना नहीं थी। अपना सम्मान बनाये रखने के साथ-साथ अन्य महिलाओं का सम्मान करना भी आवश्यक है। कहा जाता है कि नारी ही नारी की दुश्मन है, ऐसा क्यों कहा जाता है यह विचारणीय बात है। लड़के एवं लड़कियों में भेदभाव करना हमारे लिए उचित नहीं है। मैं चाहूंगी कि मुझे अगला जन्म भी एक लड़की के रूप में मिले। महिला भ्रूण हत्या नहीं होने देंगे ऐसा हम सभी को संकल्प करना है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका (शेष पेज 8 पर)

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।